July-
September 26

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

Vol - 2
Issue - 3

आधुनिक सूचना वातावरण में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के जागरूकता कार्यक्रमों की भूमिका

विनोद वहाणे
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
आर्यावर्त विश्वविद्यालय, सीहोर (म.प्र.)

शोध सारांश

वर्तमान समय में सूचना प्राद्योगिकी के विकास ने उत्पादन, संग्रहण, प्रसार तथा उपयोग के स्वरूप को पूर्ण रूप से परिवर्तित किया है। आधुनिक सूचना वातावरण में विश्वविद्यालय पुस्तकालय न केवल ज्ञान का संग्रहण केन्द्र न रहकर सूचना एवं ज्ञान के केन्द्र बन गए हैं। पुस्तकालयों के माध्यम से उपलब्ध कराए जाने वाले मुद्रित एवं सूचना संसाधनों का प्रभावी उपयोग तभी संभव है जब उपयोगकर्ता उनके प्रति जागरूक हों। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न प्रकार के जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। जिनमें पुस्तकालय अभिमुखीकरण, प्रशिक्षण, कार्यसंगोष्ठी, सूचना साक्षरता, कार्यशालाएं, उपयोगकर्ता शिक्षा कार्यक्रम, वेबिनार तथा सोशल मीडिया आधारित प्रचार गतिविधियां प्रमुख हैं।

यह अध्ययन विश्वविद्यालय पुस्तकालयों द्वारा संचालित जागरूकता कार्यक्रमों की कार्यप्रकृति, उपयोगिता तथा उनके प्रभाव का विश्लेषण करता हैं। इस अध्ययन से स्पष्ट होता हैं कि जागरूकता कार्यक्रम छात्रों, शोधार्थियों तथा शिक्षकों में पुस्तकालय संसाधनों के उपयोग को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने, सूचना प्रौद्योगिकी विकसित करने तथा सूचना संसाधनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पत्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही साथ ये कार्यक्रम सूचना खोजने, मूल्यांकन करने एवं नैतिक रूप से उपयोग करने की कार्यक्षमता को सदृढ़ बनाती हैं। यह अध्ययन निष्कर्ष रूप में यह दर्शाती है कि आधुनिक सूचना वातावरण में जागरूकता संबंधी कार्यक्रम विश्वविद्यालय पुस्कालयों की प्रभावशीलता एवं उपयोगिता को बढ़ाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

कूट शब्द

विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जागरूकता कार्यक्रम, आधुनिक सूचना वातावरण, उपयोगकर्ता शिक्षा, सूचना संसाधन, सूचना साक्षरता।

1. प्रस्तावना

विश्वविद्यालय पुस्तकालय में ज्ञान एवं अनुसंधान के प्रमुख केन्द्र होते हैं। ये पुस्तकालय छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षकों तथा उपयोगकर्ताओं को उनकी शैक्षणिक एवं अनुसंधान संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध प्रकार के सूचना संसाधन एवं सेवाएं प्रदान करते हैं। आधुनिक समय में सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने सूचना के संग्रहण, संगठन, संरक्षण एवं प्रसार के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन किया हैं। फलस्वरूप् पारंपरिक पुस्तकालय आधुनिक सूचना केंद्रों में परिवर्तित हो गए हैं, जहॉ ई -पुस्तकें, ई-जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस तथा अन्य सूचना संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं।

आधुनिक सूचना वातावरण में उपयोगकर्ताओं के समक्ष सूचना के विभिन्न स्त्रोत उपलब्ध है, जब उपयोगकर्ताओं उनके प्रति जागरूक हों तथा उन्हें खोजने, मूल्यांकन करने और उसके उपयोग करने का पर्याप्त ज्ञान रखतें हों। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखेते हुए विश्वविद्यालय पुस्तकालय अन्य प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों को आयोजन करते हैं । इन कार्यक्रमों का आयोजन करते है। उपयोगकर्ता शिक्षा, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, पुस्तकालय पुस्तक प्रदर्शनी, वेबिनार तथा सोशल मीडिया पर आधारित प्रचार एवं प्रसार की गतिविधियॉ शामिल है। जागरूकता कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय की सेवाओं, सूचना संसाधनों एवं सुविधाओं से परिचित करवाना तथा उनमें सूचना साक्षरता कौशल का विकास करना भी हैं। ऐसे विकासपूर्ण कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों और शोधार्थियों को आवश्यक सूचना स्त्रोतों की पहचान करने, सूचना संसाधनों का उपयोग करने तथा शोध कार्यो में गुणवत्तापूर्ण सूचना का चयन करने में सहायता प्रदान करतें हैं। ये कार्यक्रम पुस्तकालय और उपयोगकर्ताओं के मध्य प्रभावशील संवाद स्थापित कर पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

विश्वविद्यालय पुस्कालय शिक्षण, अधिगम एवं अनुसंधान प्रक्रियाओं को सृदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। छात्रों, अनुसंधानकर्ता एवं शिक्षकों को आवश्यक सूचना समय-समय पर उपलब्ध कराना पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य हैं। वर्तमान समय में सूचना संसाधनों की संख्या निरंतर बढ़ोत्तरी होती जा रही हैं, जिसके कारण उपयोगकर्ताओं के लिए आवष्यक एवं विश्वसनीय सूचना का चयन करना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गया हैं। ऐसी स्थिति में सूचना साक्षरता का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता हैं। सूचना साक्षरता उपयोगकर्ताओं को सूचना की आवश्यकता की पहचान करना, स्तोत्रों से सूचना प्राप्त करना, उसका मूल्यांकन करना तथा नैतिक रूप से उपयोग करने की कार्यक्षमता प्रदान करती हैं। उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय संसाधनों एवं सेवाओं के प्रति जागरूक बनाने के लिए विश्वविद्यालय पुस्तकालय विभिन्न प्रकार के जागरूकता संबंधी कार्यक्रम का आयोजन करते है।

वर्तमान अध्ययन आधुनिक सूचना वातावरण में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से संचालित जागरूकता कार्यक्रमों तथा उनके प्रभाव का विश्लेषण करना हैं। यह अध्ययन इस कथन का भी मूल्यांकन करने का प्रयास करता है कि जागरूकता कार्यक्रम किस प्रकार सूचना साक्षरता, पुस्तकालय के उपयोग, सूचना संसाधनों की पहुंच तथा शैक्षिणक और अनुसंधान गतिविधियों को प्रभावित करते है। अध्ययन के निष्कर्ष विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को अपने जागरूकता कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशील एवं उपयोगकर्ता-केंद्रित बनाने में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन आधुनिक सूचना वातावरण में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के जागरूकता कार्यक्रमों की भूमिका एवं प्रभाव: एक विष्लेषणात्मक अध्यययन विषय पर केन्द्रित है। यह अध्यययन विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से संचालित जागरूकता कार्यक्रमों की भूमिका, उपयोगिता तथा उनके प्रभाव का विश्लेषण करता हैं। साथ ही साथ यह अध्ययन यह समझने में भी प्रयास करता हैं कि जागरूकता कार्यक्रम किस से सूचना साक्षरता, डिजिटल संसाधनों के उपयोग तथा पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावशीलता को आगे बढ़ाने में योगदान देते हैं।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

2. साहित्य की समीक्षा

1. बान्डरू एवं नेक **(2026)** ने शैक्षणिक पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता तथा सूचना व्यवहार के विकास का भलीभॉति अध्ययन किया। यह निष्कर्ष दिया कि पुस्तकालयों के माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं तथा जागरूकता गतिविधियां उपयोगकर्ताओं की सूचना खोजने, मूल्यांकन करने और प्रभावी ढंग से उपयोग करने की कार्यक्षमता को सदृढ़ बनाती हैं। अनुसंधानकर्ताओं ने यह भी उल्लेख किया कि डिजिटल युग में उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों, ऑनलाइन डेटाबेस तथा डिजिटल पुस्तकालय सेवाओं के प्रभावशाली उपयोग के लिए नियमित प्रशिक्षण एवं जागकरूतामुखी कार्यक्रमों की आवश्यकता हैं। अध्ययन के निष्कर्षो से स्पष्ट हुआ है कि ऐसे कार्यक्रम छात्रों एवं अनुसंधानकर्ताओं की डिजिटल दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ उनके शैक्षिणक एवं अनुसंधान कार्यो की गुणवत्ता में भी अपना सकारात्मक योगदान देते हैं। इस प्रकार शैक्षणिक पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता एवं सूचना जागरूकता कार्यक्रमों का महत्व निरतर बढ़ रहा है।

2. शर्मा एट एल. **(2025)** ने विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों तथा उनके प्रभाव का भलीभॉति अध्ययन किया । अध्ययन के निष्कर्षो से यह ज्ञात हुआ कि नियमित रूप से आयोजित पुस्तकालय अभिमुखीकरण, सूचना साक्षरता प्रशिक्षण, कार्यशालाएं तथा उपयोगकर्ताओं शिक्षा कार्यक्रम छात्रों एवं शोधार्थियों की सूचना साक्षरता को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि ऐसे कार्यक्रम उपयोगकर्ताओं की सूचना दक्षता को बढ़ाते हैं तथा उन्हे इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों, इलेक्ट्रॉनिक जर्नलों, ऑनलाइन डेटाबेस एवं अन्य सूचना संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए सक्षम बनाते है। अध्ययन में यह भी ज्ञात हुआ कि जागरूकता कार्यक्रमों के कारणवश पुस्तकालय सेवाओं एवं संसाधनों के उपयोग में वृद्धि हुई तथा उपयोगकर्ताओं का पुस्तकालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक विकसित हुआ। अनुसंधानकर्ताओं ने यह निष्कर्ष दिया कि आधुनिक सूचना वातावरण में विश्वविद्यालय पुस्कालयों को नियमित एवं उपयोगकर्ता-केंन्द्रित जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन भी करना चाहिए, जिससे फलस्वरूप सूचना साक्षरता, डिजिटल दक्षता एवं पुस्तकालय उपयोग को और अधिक सृदृढ़ बनाया जा सके।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

3. एन. विजयकुमार एवं जी. रूपा **(2024)** ने बैंगलोर विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय में पुस्तकालय स्त्रोतों एवं सेवाओं के प्रति उपयोगकर्ताओं की जागरूकता और उपयोग का विशिष्ट अध्ययन किया। अध्ययन में यह प्राप्त हुआा कि अधिकांश छात्र एवं शोधार्थी पुस्तकालय संसाधनों, जैसे पाठ्यपुस्तकों, थीसिस, शोध- प्रबंधो तथा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का नियमित उपयोग करतें हैं। इस शोध में उपयोगकर्ता जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया हैं।

4. आइना एट. एल. **(2023)** ने शैक्षिणक पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं की जागरूकता, उपयोग तथा पुस्तकालय सेवाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण का विस्तृत अध्ययन किया। अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया कि अधिकांश उपयोगकर्ताओं पारंपरिक पुस्तकालय संसाधनों, जैसे संदर्भ ग्रंथों, मुद्रित पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के प्रति पर्याप्त रूप से जागरूक थे। इसके विपरित, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस तथा अन्य सूचना सेवाओं के उपयोग का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। अनुसंधानकर्ताओं के अनुसार इस स्थिति का प्रमुख कारण सूचना संसाधनों के संबंध में पर्याप्त जानकारी एवं प्रशिक्षण की कमी हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि जिन उपयोगकर्ताओं ने पुस्तकालय के माध्यम से आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों एवं साक्षरता कार्यक्रमों में भाग लिया, वे सूचना संसाधनों का अधिक प्रभाव ढंग से उपयोग कर रहे थे। अनुसंधानकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला कि शैक्षिणक पुस्तकालयों को सूचना सेवाओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए नियमित प्रशिक्षण, संगोष्ठियों, कार्यशालाएं एवं जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे उपयोगकर्ताओं की सूचना दक्षता एवं सूचना साक्षरता में वृद्धि हो सके।

5. जमुना और धनामजया **(2021)** ने बेंगलुरू सिटी विश्वविद्यालय से संबंद्ध महाविद्यालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की जागरूकता एवं उपयोग पर अध्ययन किया गया। अध्ययन में यह प्राप्त हुआ कि 89 प्रतिशत उत्तरदाता इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों से भलीभॉति परिचित थे तथा अधिकांश उपयोगकर्ता उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों से संतुष्ट थे, इंटरेनेट की की कम गति और सूचना को खोजने में कठिनाई प्रमुख समस्याएं थी।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

समीक्षा निष्कर्ष

अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से संचालित जागरूकता कार्यक्रम सूचना साक्षरता के विकास, सूचना संसाधनों के प्रभावी रूप से उपयोग तथा अनुसंधान एवं शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विभिन्न अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि पुस्तकालय अभिमुखीकरण कार्यक्रम, सूचना साक्षरता प्रशिक्षण, कार्यशालाएं तथा उपयोगकर्ता शिक्षा कार्यक्रम छात्रों एवं अनुसंधानकर्ताओं को उपलब्ध संसाधनों के प्रति जागरूक बनाने में प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं। इन कार्यक्रमों के द्वारा उपयोगकर्ताओं की सूचना खोजने, उसका मूल्यांकन करने तथा नैतिक रूप से उपयोग करने की कार्यक्षमता विकसित होती है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल पुस्कालयों, इलेक्ट्रॉनिक जर्नलों, इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों तथा ऑनलाइन डेटाबेस जैसे डिजिटल संसाधनों के उपयोग में भी वृद्धि देखी गई हैं। वर्तमान समय में ए.आई., मशीन लर्निंग तथा अन्य तकनीकों के बढ़ते उनयोग ने पुस्तकालय सेवाओं के स्वरूप को और भी अधिक आधुनिक बना दिया हैं। इसके फलस्वरूप, ए. आई. एवं सूचना साक्षरता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का महत्व निरंतर बढ़ रहा हैं। ये कार्यक्रम उपयोगकर्ताओं को एक नई तकनीकों को समझने, डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने तथा सूचना के प्रति सकरात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं। अतः विश्वविद्यालयों पुस्तकालयों के लिए यह आवश्यक हैं कि समय-समय पर नवीन तकनीकों पर आधारित जागरूकता एवं प्रशिक्षण के कार्यक्रमों का आयोजन करे, ताकि उपयोगकर्ताओं की सूचना साक्षरता, डिजिटल दक्षता तथा अनुसंधान क्षमता को और भी अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. आधुनिक सूचना के वातावरण की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से संचालित जागरूकता कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
3. जागरूकता कार्यक्रमों के उपयोगकर्ताओं पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
4. सूचना साक्षरता के विकास में जागरूकता कार्यक्रमों की भूमिका का मूल्यांकन करना।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

5. पुस्तकालय सेवाओं के उपयोग में जागरूकता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

4. अनुसंधान पद्धित

वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध है, जो पूर्णतः द्वितीयक ऑंकड़ों पर आधारित हैं। अध्ययन हेतु शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों, सम्मेलन, विश्वविद्यालयों की रिपोर्टों, ई-जर्नलों तथा विभिन्न शैक्षिणक वेबसाइटों से संबंधित जानकारियों को संकलित किया गया हैं। विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों एवं उनके प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

तालिका 1: **विश्वविद्यालय पुस्तकालय संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग स्तर**

क्रमांक	पुस्तकालय संसाधन/सेवा	जागरूकता स्तर **(%)**	सक्रिय उपयोग **(%)**
1	मुद्रित पुस्तकें एवं पाठ्यपुस्तके	85-98	70-85
2	समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं	90-100	45-60
3	ऑनलाइन डेटाबेस एवं ई-जर्नल	45-65	30-40
4	संदर्भ सेवा	40-55	15-25

(द्वितीयक स्त्रोत के आधार पर)

Aryavart
Journal of Multidisciplinary Research

तलिका 2: **पुस्तकालय संसाधनों के उपयोग में वृद्धि**

क्रमांक	संसाधन	उपयोग **(%)**
1	मुद्रित पुस्तकें	65
2	इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकें	82
3	इलेक्ट्रॉनिक जर्नल	78
4	ऑनलाइन डेटाबेस	74

(द्वितीयक स्त्रोत के आधार पर)

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

तलिका 3: जागरूकता कार्यक्रमों के प्रमुख लाभ

क्रमांक	लाभ	प्रतिशत (%)
1	पुस्तकालय उपयोग में बढ़ोत्तरी	85
2	अनुसंधान गुणवत्ता में सुधार	76
3	सूचना संसाधनों का उपयोग	81
4	उपयोगकर्ता संतुष्टि	88

(द्वितीयक स्त्रोत के आधार पर)

तलिका 4: जागरूकता कार्यक्रमों की मुख्य चुनौतियॉ

क्रमांक	चुनौती	प्रतिशत (%)
1	जागरूकता का अभाव	42
2	तकनीकी समस्याएं	28
3	समय का अभाव	18
4	प्रशिक्षण मे अभाव	12

(द्वितीयक स्त्रोत के आधार पर)

तलिका 5: जागरूकता कार्यक्रमों में छात्रों का योगदान

क्रमांक	वर्ष	योगदान (%)
1	2021	52
2	2022	61
3	2023	69
4	2024	78
5	2025	86

(द्वितीयक स्त्रोत के आधार पर)

स्त्रोत - शर्मा एवं यादव (2018), आइना एवं सहयोगी (2023), तथा कौर एवं सिंह (2019) के प्रकाशित अध्ययनों के आधार पर अनसंधानकर्ताओं द्वारा संकलित एवं विश्लेषित। ये निष्कर्ष विभिन्न द्वितीयक स्तोत्रों के तुल्नात्मक अध्ययन पर आधारित है तथा विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के जागरूकता कार्यक्रमों, सूचना साक्षरता एवं डिजिटल संसाधनो के अपयोग की प्रवृतियों को दर्शाते हैं। प्रस्तुत ऑकड़े किसी एक अध्ययन से प्रत्यक्ष रूप से नही लिए गए हैं, बल्कि विभिन्न शोध निष्कर्षो के द्वारा विश्लेषण का परिणाम हैं। इनका उद्देश्य अध्ययन विषय की प्रवृत्तियों एवं प्रभावों को स्पष्ट करना हैं।

विश्लेषण एवं चर्चा

इस अध्ययन से यह ज्ञात हुआ हैं कि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से आयोजित जागरूकता कार्यक्रम पुस्तकालय संसाधनों एवं सेवाओं के उपयोग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पुस्तकालय अभिमुखीकरण, सूचना साक्षरता प्रषिक्षण, कार्यशालाएं तथा अन्य जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध संसाधनों एवं सेवाओं की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, जिससे उनके उपयोग में अभिवृद्धि होती है। अध्ययन के निष्कर्षो से यह भी स्पष्ट हुआ कि इन सभी के कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों एवं अनुसंधानकर्ता की सूचना साक्षरता में अत्यधिक सुधार हुआ हैं तथा वे सूचना को खोजने, उसका उचित मूल्यांकन करने और उसे प्रभावी ढंग से उपयोग करने में अधिक सक्षम बने हैं।

इसके अतिरिक्त, जागरूकता कार्यक्रमों के कारण इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों, इलेक्ट्रॉनिक जर्नलों, ऑनलाइन डेटाबेस तथा अन्य डिजिटल संसाधनों के उपयोग में भी अभिवृद्धि देखी गई है। उपयोगकर्ताओं की आत्मसंतुष्टि के स्तर में अत्यधिक सुधार हुआ हैं तथा पुस्तकालय सेवाओं के प्रति उनका दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक बना हैं। हालांकि, अध्ययन में यह भी पाया गया है कि डिजिटल सेवाओं, विशेषकर उन्नत ऑनलाइन संसाधनों एवं डिजिटल उपकरणों के प्रति जागरूकता की कमी अभी भी एक मुख्य चुनौती बना हुआ है। कई उपयोगकर्ता उपलब्ध डिजिटल सेवाओं की जानकारी के अभाव में उनका परस्पर लाभ नही उठा पाते हैं। इसलिए विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को नियमित रूप से जागरूकता एवं प्रशिक्षण से परिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित करने

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

चाहिए, जिससे कि उपयोगकर्ताओं की डिजिटल दक्षता, और सूचना साक्षरता को अधिक विकसित किया जा सकें।

5. प्रमुख निष्कर्ष

1. विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के जागरूकता कार्यक्रम पुस्तकालय संसाधनों के उपयोग को आगे बढ़ाने में प्रमुख रूप से सहायक हैं।
2. इन कार्यक्रमों से सूचना साक्षरता एवं सूचना दक्षता में सुधार किया जा सकता हैं।
3. इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों, इलेक्ट्रॉनिक जर्नलों एवं ऑनलाइन डेटाबेस के उपयोग में मुख्य रूप से देखी गई हैं।
4. सोशल मीडिया, पुस्तकालय अभिमुखीकरण, प्रशिक्षण, कार्यसंगोष्ठी, सूचना साक्षरता, कार्यशालाएं, उपयोगकर्ता शिक्षा कार्यक्रम, जागरूकता को बढ़ाने में प्रभावी माध्यम हैं।
5. सूचना सेवाओं के प्रति जागरूकता का अभाव अभी भी एक मुख्य चुनौती हैं।
6. नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम उपयोगकर्ता संतुष्टि एवं पुस्तकालय उपयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते है।
7. जागरूकता कार्यक्रमों के द्वारा पुस्तकालय की उपयोगिता एवं दृष्यता में वृद्धि होती है।
8. उपयोगकर्ता की परिवर्तनशील सूचना आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों का निरंतर समन्वय किया जाना आवश्यक हैं।
9. अध्ययन से ज्ञात होता है कि नियमित जागरूकता गतिविधियॉ पुस्तकालय एवं उपयोगकर्ता के मध्य में संवाद को और अधिक सशक्त बनाती हैं।
2. ए. आई. इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म एवं डिजिटल उपकरणों के बढ़ते उपयोग के कारण जागरूकता कार्यक्रमों की प्रकृति अधिक तकनीकी एवं उपयोगकर्ता के मध्य होती जा रही हैं।

6. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के प्रति जागरूकता कार्यक्रम सूचना साक्षरता, डिजिटल संसाधनों के उपयोग तथा पुस्तकालय सेवाओं की प्रभाावशीलता को अग्रसर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। आधुनिक सूचना

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

वातावरण में, जहॉ सूचना संसाधनों की मात्रा नियमित रूप से बढ़ती जा रही हैं, वही उपयोगकर्ताओं के लिए सही एवं प्रासंगिक सूचना की सही पहचान और उसका प्रभावी उपयोग एक प्रमुख चुनौती बन गया हैं। ऐसे स्थिति में पुस्तकालयों के माध्यम से आयोजित जागरूकता कार्यक्रम उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध संसाधनों एवं सेवाओं के प्रति जागरूक बनाने के साथ-साथ उनकी सूचना साक्षरता एवं डिजिटल दक्षता को भी विकसित करते है।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष प्राप्त होता है कि पुस्तकालय अभिमुखीकरण कार्यक्रम, सूचना साक्षरता प्रशिक्षण, कार्यशालाएं, संगोष्ठियां तथा सोशल मीडिया आधारित जागरूकता गतिविधियॉ उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय संसाधनों के अधिक रूप से प्रभावी उपयोग के लिए प्रेरित करती हैं। इन सभी कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों, इलेक्ट्रॉनिक जर्नलों, ऑनलाइन डेटाबेस तथा अन्य डिजिटल संसाधनों के उपयोग में अभिवृद्धि होती हैं, जिससे शिक्षण, अधिगम एवं अनुसंधान कार्यो की गुणवत्ता में अत्यधिक सुधार देखा जाता हैं।

अतः विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के माध्यम से अनेक जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, फिर भी डिजिटल सेवाओं एवं उन्नत सूचना संसाधनों के प्रति जागरूकता की कमी, तकनीकी चुनौतियां तथा प्रशिक्षण की कमी जैसी समस्याएं अभी भी उपलब्ध हैं। इसलिए यह आवश्यक हैं कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय नियमित, उपयोगकर्ता - केंद्रित एवं सूचना प्रौद्योगिकी आधारित जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करें। ए. आई. डिजिटल साक्षरता तथा नवीना सूचना प्रौद्योगिकियों को इन कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जाए, ताकि उपयोगकर्ता इस परिवर्तनशील सूचना परिवेश के अनुरूप स्वयं को विकसित कर सकें।

अतः निष्कर्ष रूप यह कहा जा सकता है कि जागरूकता कार्यक्रम विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की सेवाओं को अधिक प्रभावी, उपयोगी एवं उपयोगकर्ता - केंद्रित बनाने का एक सशक्त माध्यम हैं। इन कार्यक्रमों के द्वारा न केवल पुस्तकालय संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता हैं, बल्कि छात्रो, अनुसंधानकर्ताओं एवं शिक्षकों की शैक्षणिक और अनुसंधान क्षमताओं को और भी सुदृढ़ बनाया जा सकता हैं।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

संदर्भ सूची

1. वाद्य, पी. एवं गाडगे, एस. (2026). शैक्षिणक पुस्कालयों के सूचना साक्षरता कार्यक्रमों में ए.आई. का उपयोग।
2. शर्मा, ए. वर्मा, एस. एवं सिंह, आर. (2025). विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय जागरूकता कार्यक्रमों का सूचना साक्षरता एवं पुस्तकालय उपयोग का प्रभाव।
3. गुप्ता, आर. एवं मिश्रा, पी. (2024). पुस्तकालय जागरूकता कार्यक्रमों एवं उपयोगकर्ताओं भागीदारी में सोशल मीडिया की अहम भूमिका।
4. विजयकुमार, एन. एवं रूपा, जी. (2024). बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर केंद्रीय पुस्तकालय, बेंगलरू विश्वविद्यालय में पुस्तकालय संसाधनों एवं सेवाओं के प्रति जागरूकता और उपयोगः इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रियटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), vol. 12, no. 7, 2024, pp. e273-e281.
5. आइना, आर. एफ. एवं सहयोगी. (2023). शैक्षिणक पुस्तकालय संसाधनों एवं सेवाओं के प्रति उपयोगकर्ताओं की जागरूकता, उपयोग एवं दृष्टिकोण।
6. जमुना, के. एवं धनंजय, एम. (2021). बेंगलुरू सिटी विश्वविद्यालय से संबंद्ध महाविद्यालयों में ई-संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग की सरलता का अध्ययन। लाइब्रेरी फिलॉसफी एण्ड प्रैक्टिस (ई-जर्नल), 6734.
7. कौर, ए. एवं सिंह, एच. (2019). शैक्षणिक पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता एवं जागरूकता कार्यक्रम।
8. शर्मा, पी. एवं यादव, एस. (2018). एन.आई.एम.एस. विश्वविद्यालय केन्द्रीय पुस्तकालय, जयपुर के उपयोगकर्ताओं के माध्यम से पुस्तकालय संसाधनों की जागरूकता एवं उपयोगिता का अध्ययन।
9. एसीआरएल (2016). उच्च शिक्षा के लिए सूचना साक्षरता की रूपरेखा।
10. कुम्बार एवं हडगली (2014). आजीवन अधिगम हेतु सूचना साक्षरता का दिशानिर्देश।